

वेदों में नारी: एक विस्तृत अध्ययन

सुनीता देवी, शोध छात्रा, संस्कृत विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखंड

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति और सभ्यता के प्राचीनतम ग्रंथों में वेदों का विशेष स्थान है। वेद न केवल धार्मिक ग्रंथ हैं, बल्कि ये मानवता के लिए ज्ञान, विज्ञान, और नैतिकता का स्रोत भी हैं। वेदों में नारी का स्थान और योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस शोध आलेख में हम वेदों में नारी की भूमिका, उसके सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक योगदान का विश्लेषण करेंगे। प्रस्तुत शोध पत्र में वैदिककालीन नारी की स्थिति को उजागर करते हुए वर्णित किया है कि वैदिक समाज यद्यपि पितृसत्तात्मक था, परंतु फिर भी समाज में नारी को पुत्री, बहन, पत्नी और माता के रूप में सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। पुत्री के रूप में जहां वह लड़कों के समान वैदिक साहित्य का अध्ययन करती हुई हर स्थान पर लड़कों के बराबर दिखाई देती हैं, वहीं पत्नी के रूप में वह पुरुष की अर्धांगिनी, सहधर्मिणी तथा गृहस्वामिनी थी और प्रत्येक धार्मिक कृत्य उसकी उपस्थिति के बिना अधूरा था। माता के रूप में वह पूजनीय थी। वैदिक समाज में कन्या वध, पर्दा प्रथा, बाल विवाह, सती प्रथा व दहेज प्रथा जैसी कुप्रथाएं प्रचलित नहीं हुई थी। विधवा को भी पुनर्विवाह की अनुमति थी। वैदिक काल का अंत होते होते नारी की इस आदर्श स्थिति में बदलाव के संकेत दिखाई देने लगते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति का ऐतिहासिक अध्ययन किया गया है। महिलाओं और बच्चों की स्थिति केवल किसी भी देश या समाज के विकास संकेतकों के लिए स्पष्ट है। क्योंकि बच्चा देश का भविष्य है, महिला उसकी पहली शिक्षिका है, उसका पालन पोषण और मार्गदर्शन करती है, लेकिन वर्तमान समय में सभी प्रयासों के बावजूद, देश में महिलाओं और बच्चों की स्थिति बहुत चिंताजनक है। वर्तमान में, संयुक्त राष्ट्र या यूनिसेफ जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठन, जो अशिक्षा, गरीबी और गरीबी के कारण अभी भी कुपोषित रह रहे हैं, ने बच्चों के स्वास्थ्य और उनकी शिक्षा के महत्व पर चिंता व्यक्त की है। शिक्षा किसी भी देश में परिवर्तन या क्रांति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब हम वैदिक काल को देखते हैं, तो हजारों साल पहले का समाज भी अधिक प्रगतिशील दिखाई देता है। जो जीवन को निरर्थक नहीं मानता है, लेकिन वह प्रवृत्ति-प्रधान है जो जीवन के प्रति आशावादी और मेहनती है। उनकी प्रार्थनाएं ऐसी हैं जो पुरुषों के भीतर उत्तेजना

पैदा करती हैं, उनकी प्रार्थना लंबे जीवन, स्वस्थ शरीर, जीत, खुशी और समृद्धि के लिए प्रार्थना की गई थी। वैदिक काल में, समाज में रहने वाली हर जाति, वर्ग, वर्ग और महिला को भी हर क्षेत्र में पर्याप्त स्वतंत्रता मिली। वैदिक समाज में हमें पर्याप्त सामाजिक गतिशीलता देखने को मिलती है। यही कारण है कि वैदिक युग की महिलाएं अभी भी महिलाओं के लिए आदर्श बनी हुई हैं। जब हम वैदिक काल के समाज में महिलाओं की स्थिति का अध्ययन करते हैं, तो यह ज्ञात है कि परंपरागत रूप से भारत के इतिहास में, महिलाओं की स्थिति दुनिया के अन्य हिस्सों की तुलना में अधिक थी।

संकेत शब्द : ऋग्वेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद, सामवेद, नारी, वैदिककालीन, वैदिक काल, नारी, स्थिति, शिक्षा, समाज आदिकाल से ही समाज में नारी का गरिमामय व महत्वपूर्ण स्थान रहा है। नारी को जीवन की आधारशिला माना गया है। किसी भी समाज व राष्ट्र की स्थिति को वहां की नारियों की दशा को देखकर ही आंका जा सकता है। वैदिक ग्रंथों के अनुशीलन से पता चलता है कि वैदिक युग में भी नारी को सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त थी। उसे पुरुषों के समान सभी अधिकार प्राप्त थे। अतः नारी को सभी क्षेत्रों जैसे शिक्षा, यज्ञ, विवाह, जीवन निर्वाह, अभिव्यक्ति व विचरण आदि की स्वतंत्रता प्राप्त होना, उसके प्रति सकारात्मक सामाजिक दृष्टिकोण का प्रमाण है। इस सकारात्मक दृष्टिकोण में धीरे धीरे बदलाव दृष्टिगोचर होता है। जिससे नारी की स्थिति उत्तरोत्तर शोचनीय होती गई। प्रस्तुत शोध लेख में नारी की इसी स्थिति को रेखांकित किया गया है।

1. वेदों का परिचय

वेद चार प्रमुख ग्रंथों में विभाजित हैं: ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, और अथर्ववेद। ये ग्रंथ संस्कृत में लिखे गए हैं और इनमें प्राचीन भारतीय समाज की धार्मिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक मान्यताएँ समाहित हैं। वेदों में नारी की स्थिति और उसके योगदान को समझने के लिए हमें इन ग्रंथों के विभिन्न श्लोकों और मंत्रों का अध्ययन करना होगा।

1.1. ऋग्वेद

ऋग्वेद में नारी को 'उषा' के रूप में दर्शाया गया है, जो जीवन और प्रकाश का प्रतीक है। इसमें नारी की शक्ति, ज्ञान, और उसकी सामाजिक भूमिका को स्पष्ट रूप से वर्णित किया गया है।

1.2. यजुर्वेद

यजुर्वेद में नारी की शिक्षा और ज्ञान पर जोर दिया गया है। यहाँ नारी को यज्ञों में भाग लेने और धार्मिक अनुष्ठानों में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया गया है।

1.3. सामवेद

सामवेद में नारी का स्थान यज्ञ में महत्वपूर्ण है। यहाँ नारी को पूजा और अनुष्ठानों में शामिल किया गया है, जो उसकी धार्मिक भूमिका को दर्शाता है।

1.4. अथर्ववेद

अथर्ववेद में नारी की सामाजिक स्थिति और उसके अधिकारों का उल्लेख है। इसमें नारी को परिवार की धुरी और समाज की आधारशिला के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

2. वेदों में नारी की सामाजिक भूमिका

2.1. नारी का सम्मान

वेदों में नारी को सम्मानित स्थान दिया गया है। नारी को माँ, पत्नी, और बहन के रूप में देखा गया है। यह दर्शाता है कि नारी केवल परिवार की धुरी नहीं है, बल्कि समाज की भी आधारशिला है।

2.2. शिक्षा का अधिकार

वेदों में नारी को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार दिया गया है। यह स्पष्ट है कि प्राचीन भारत में महिलाएँ शिक्षा प्राप्त करती थीं। नारी को ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया गया है, जिससे वह अपने परिवार और समाज में सकारात्मक बदलाव ला सके।

2.3. धार्मिक अनुष्ठानों में भागीदारी

वेदों में नारी की धार्मिक भूमिका को भी महत्व दिया गया है। नारी को पूजा और अनुष्ठानों में सक्रिय रूप से शामिल किया गया है। यज्ञ में नारी का योगदान न केवल धार्मिक गतिविधियों में बल्कि समाज के उत्थान में भी महत्वपूर्ण है।

2.4. आर्थिक भूमिका

वेदों में नारी की आर्थिक भूमिका को भी उजागर किया गया है। कृषि और उत्पादन में नारी का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। ऋग्वेद में कृषि कार्यों में महिलाओं की भागीदारी का उल्लेख है, जो यह दर्शाता है कि वे आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल थीं।

3. वेदों में नारी के अधिकार

3.1. व्यक्तिगत अधिकार

वेदों में नारी को व्यक्तिगत अधिकार दिए गए हैं। नारी को अपने जीवनसाथी का चयन करने और अपने जीवन के निर्णय लेने का अधिकार है। यह दर्शाता है कि नारी को स्वतंत्रता और सम्मान दिया गया है।

3.2. सामाजिक अधिकार

वेदों में नारी को सामाजिक अधिकार भी दिए गए हैं। नारी को समाज में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया गया है। यह स्पष्ट है कि नारी को समाज में समानता का अधिकार है।

4. नारी का योगदान

4.1. परिवार में योगदान

नारी का परिवार में योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। नारी न केवल परिवार की धुरी होती है, बल्कि वह अपने बच्चों को शिक्षा और संस्कार देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

4.2. समाज में योगदान

नारी ने समाज के उत्थान में अपनी भूमिका निभाई है, चाहे वह शिक्षा के क्षेत्र में हो या सामाजिक सुधारों में। कई सामाजिक आंदोलनों में महिलाओं ने अग्रणी भूमिका निभाई है, जैसे कि सती प्रथा के खिलाफ आंदोलन और बाल विवाह के खिलाफ संघर्ष।

4.3. धार्मिक क्षेत्र में योगदान

धार्मिक क्षेत्र में नारी का योगदान अद्वितीय है। नारी ने धार्मिक अनुष्ठानों, पूजा-पाठ, और धार्मिक शिक्षाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

5. वेदों में नारी के स्वरूप की झलक

वेद नारी को अत्यंत महत्वपूर्ण, गरिमामय, उच्च स्थान प्रदान करते हैं। वेदों में स्त्रियों की शिक्षा- दीक्षा, शील, गुण, कर्तव्य, अधिकार और सामाजिक भूमिका का जो सुन्दर वर्णन पाया जाता है, वैसा संसार के अन्य किसी धर्मग्रंथ में नहीं है। वेद उन्हें घर की सम्राज्ञी कहते हैं और देश की शासक, पृथ्वी की सम्राज्ञी तक बनने का अधिकार देते हैं।

वेदों में स्त्री यज्ञीय है अर्थात् यज्ञ समान पूजनीय। वेदों में नारी को ज्ञान देने वाली, सुख – समृद्धि लाने वाली, विशेष तेज वाली, देवी, विदुषी, सरस्वती, इन्द्राणी, उषा- जो सबको जगाती है इत्यादि अनेक आदर सूचक नाम दिए गए हैं।

वेदों में स्त्रियों पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं है – उसे सदा विजयिनी कहा गया है और उन के हर काम में सहयोग और प्रोत्साहन की बात कही गई है। वैदिक काल में नारी अध्यन- अध्यापन से लेकर रणक्षेत्र में भी जाती थी। जैसे कैकयी महाराज दशरथ के साथ युद्ध में गई थी। कन्या को अपना पति स्वयं चुनने का अधिकार देकर वेद पुरुष से एक कदम आगे ही रखते हैं।

अनेक ऋषिकाएं वेद मंत्रों की द्रष्टा हैं – अपाला, घोषा, सरस्वती, सर्पराज्ञी, सूर्या, सावित्री, अदिति- दाक्षायनी, लोपामुद्रा, विश्ववारा, आत्रेयी आदि।

तथापि, जिन्होंने वेदों के दर्शन भी नहीं किए, ऐसे कुछ रीढ़ की हड्डी विहीन बुद्धिवादियों ने इस देश की सभ्यता, संस्कृति को नष्ट – भ्रष्ट करने का जो अभियान चला रखा है – उसके तहत वेदों में नारी की अवमानना का ढोल पीटते रहते हैं।

आइए, वेदों में नारी के स्वरूप की झलक इन मंत्रों में देखें -

स्त्री और पुरुष दोनों को शासक चुने जाने का समान अधिकार है।(यजुर्वेद २०.९)

स्त्रियों की भी सेना हो। स्त्रियों को युद्ध में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें।(यजुर्वेद १७.४५)

शासकों की स्त्रियां अन्यो को राजनीति की शिक्षा दें। जैसे राजा, लोगों का न्याय करते हैं वैसे ही रानी भी न्याय करने वाली हों।(यजुर्वेद १०.२६)

ब्रह्मचर्य सूक्त के इस मंत्र में कन्याओं के लिए भी ब्रह्मचर्य और विद्या ग्रहण करने के बाद ही विवाह करने के लिए कहा गया है। यह सूक्त लड़कों के समान ही कन्याओं की शिक्षा को भी विशेष महत्त्व देता है।(अथर्ववेद ११.५.१८)

कन्याएं ब्रह्मचर्य के सेवन से पूर्ण विदुषी और युवती होकर ही विवाह करें।(अथर्ववेद १४.१.६)

माता- पिता अपनी कन्या को पति के घर जाते समय बुद्धिमत्ता और विद्याबल का उपहार दें। वे उसे ज्ञान का दहेज दें।

जब कन्याएं बाहरी उपकरणों को छोड़ कर, भीतरी विद्या बल से चैतन्य स्वभाव और पदार्थों को दिव्य दृष्टि से देखने वाली और आकाश और भूमि से सुवर्ण आदि प्राप्त करने – कराने वाली हो तब सुयोग्य पति से विवाह करें।(अथर्ववेद १४.१.२०)

हे पत्नी ! हमें ज्ञान का उपदेश करा।

वधू अपनी विद्वत्ता और शुभ गुणों से पति के घर में सब को प्रसन्न कर दो।(अथर्ववेद ७.४६.३)

पति को संपत्ति कमाने के तरीके बता।

संतानों को पालने वाली, निश्चित ज्ञान वाली, सहत्रों स्तुति वाली और चारों ओर प्रभाव डालने वाली स्त्री, तुम ऐश्वर्य पाती हो। हे सुयोग्य पति की पत्नी, अपने पति को संपत्ति के लिए आगे बढ़ाओ।(अथर्ववेद ७.४७.१)

हे स्त्री ! तुम सभी कर्मों को जानती हो।

हे स्त्री ! तुम हमें ऐश्वर्य और समृद्धि दो।(अथर्ववेद ७.४७.२)

तुम सब कुछ जानने वाली हमें धन – धान्य से समर्थ कर दो।

हे स्त्री ! तुम हमारे धन और समृद्धि को बढ़ाओ।(अथर्ववेद ७.४८.२)

तुम हमें बुद्धि से धन दो।

विदुषी, सम्माननीय, विचारशील, प्रसन्नचित्त पत्नी संपत्ति की रक्षा और वृद्धि करती है और घर में सुख लाती है।(अथर्ववेद १४.१.६४)

हे स्त्री ! तुम हमारे घर की प्रत्येक दिशा में ब्रह्म अर्थात् वैदिक ज्ञान का प्रयोग करो।

हे वधू ! विद्वानों के घर में पहुंच कर कल्याणकारिणी और सुखदायिनी होकर तुम विराजमान हो।(अथर्ववेद २.३६.५)

हे वधू ! तुम ऐश्वर्य की नौका पर चढ़ो और अपने पति को जो कि तुमने स्वयं पसंद किया है, संसार – सागर के पार पहुंचा दो।

हे वधू ! ऐश्वर्य कि अटूट नाव पर चढ़ और अपने पति को सफलता के तट पर ले चला।(अथर्ववेद १.१४.३)

हे वर ! यह वधू तुम्हारे कुल की रक्षा करने वाली है।

हे वर ! यह कन्या तुम्हारे कुल की रक्षा करने वाली है। यह बहुत काल तक तुम्हारे घर में निवास करे और बुद्धिमत्ता के बीज बोये।(अथर्ववेद २.३६.३)

यह वधू पति के घर जा कर रानी बने और वहां प्रकाशित हो।(अथर्ववेद ११.१.१७)

ये स्त्रियां शुद्ध, पवित्र और यज्ञीय (यज्ञ समान पूजनीय) हैं, ये प्रजा, पशु और अन्न देती हैं।

यह स्त्रियां शुद्ध स्वभाव वाली, पवित्र आचरण वाली, पूजनीय, सेवा योग्य, शुभ चरित्र वाली और विद्वत्तापूर्ण हैं। यह समाज को प्रजा, पशु और सुख पहुंचाती हैं।(अथर्ववेद १२.१.२५)

हे मातृभूमि ! कन्याओं में जो तेज होता है, वह हमें दो।

स्त्रियों में जो सेवनीय ऐश्वर्य और कांति है, हे भूमि ! उस के साथ हमें भी मिला।(अथर्ववेद १२.२.३१)

स्त्रियां कभी दुख से रोयें नहीं, इन्हें निरोग रखा जाए और रत्न, आभूषण इत्यादि पहनने को दिए जाएं।(अथर्ववेद १४.१.२०)

हे वधू ! तुम पति के घर में जा कर गृहपत्नी और सब को वश में रखने वाली बनो।(अथर्ववेद १४.१.५०)

हे पत्नी ! अपने सौभाग्य के लिए मैं तेरा हाथ पकड़ता हूं।(अथर्ववेद १४.२.२६)

हे वधू ! तुम कल्याण करने वाली हो और घरों को उद्देश्य तक पहुंचाने वाली हो।(अथर्ववेद १४.२.७१)

हे पत्नी ! मैं ज्ञानवान हूं तू भी ज्ञानवती है, मैं सामवेद हूं तो तू ऋग्वेद है।(अथर्ववेद १४.२.७४)

यह वधू विराट अर्थात् चमकने वाली है, इस ने सब को जीत लिया है।

यह वधू बड़े ऐश्वर्य वाली और पुरुषार्थिनी हो।(अथर्ववेद ७.३८.४ और १२.३.५२)

सभा और समिति में जा कर स्त्रियां भाग लें और अपने विचार प्रकट करें।(ऋग्वेद १०.८५.७)

माता- पिता अपनी कन्या को पति के घर जाते समय बुद्धिमत्ता और विद्याबल उपहार में दें। माता- पिता को चाहिए कि वे अपनी कन्या को दहेज भी दें तो वह ज्ञान का दहेज हो।(ऋग्वेद ३.३१.१)

पुत्रों की ही भांति पुत्री भी अपने पिता की संपत्ति में समान रूप से उत्तराधिकारी है।(ऋग्वेद १०.१.५९)

एक गृहपत्नी प्रातः काल उठते ही अपने उद्गार कहती है -

“यह सूर्य उदय हुआ है, इस के साथ ही मेरा सौभाग्य भी ऊँचा चढ़ निकला है। मैं अपने घर और समाज की ध्वजा हूँ, उस की मस्तक हूँ। मैं भारी व्यख्यात्री हूँ। मेरे पुत्र शत्रु -विजयी हैं। मेरी पुत्री संसार में चमकती है। मैं स्वयं दुश्मनों को जीतने वाली हूँ। मेरे पति का असीम यश है। मैंने वह त्याग किया है जिससे इन्द्र (सम्राट) विजय पता है। मुझे भी विजय मिली है। मैंने अपने शत्रु निःशेष कर दिए हैं। ”

वह सूर्य ऊपर आ गया है और मेरा सौभाग्य भी ऊँचा हो गया है। मैं जानती हूँ, अपने प्रतिस्पर्धियों को जीतकर मैंने पति के प्रेम को फिर से पा लिया है।

मैं प्रतीक हूँ, मैं शिर हूँ, मैं सबसे प्रमुख हूँ और अब मैं कहती हूँ कि मेरी इच्छा के अनुसार ही मेरा पति आचरण करे। प्रतिस्पर्धी मेरा कोई नहीं है।

मेरे पुत्र मेरे शत्रुओं को नष्ट करने वाले हैं, मेरी पुत्री रानी है, मैं विजयशील हूँ। मेरे और मेरे पति के प्रेम की व्यापक प्रसिद्धि है।

ओ प्रबुद्ध ! मैंने उस अर्ध्य को अर्पण किया है, जो सबसे अधिक उदाहरणीय है और इस तरह मैं सबसे अधिक प्रसिद्ध और सामर्थ्यवान हो गई हूँ। मैंने स्वयं को अपने प्रतिस्पर्धियों से मुक्त कर लिया है।

मैं प्रतिस्पर्धियों से मुक्त हो कर, अब प्रतिस्पर्धियों की विध्वंसक हूँ और विजेता हूँ। मैंने दूसरों का वैभव ऐसे हर लिया है जैसे की वह न टिक पाने वाले कमजोर बांध हों। मैंने मेरे प्रतिस्पर्धियों पर विजय प्राप्त कर ली है। जिससे मैं इस नायक और उस की प्रजा पर यथेष्ट शासन चला सकती हूँ।

इस मंत्र की ऋषिका और देवता दोनों हो शची हैं। शची इन्द्राणी है, शची स्वयं में राज्य की सम्राज्ञी है (जैसे कि कोई महिला प्रधानमंत्री या राष्ट्राध्यक्ष हो)। उस के पुत्र – पुत्री भी राज्य के लिए समर्पित हैं।(ऋग्वेद १.१६४.४१)

ऐसे निर्मल मन वाली स्त्री जिसका मन एक पारदर्शी स्फटिक जैसे परिशुद्ध जल की तरह हो वह एक वेद, दो वेद या चार वेद, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांधर्ववेद, अथर्ववेद इत्यादि के साथ ही छः वेदांगों – शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छंद : को प्राप्त करे और इस वैविध्यपूर्ण ज्ञान को अन्यो को भी दे।

हे स्त्री पुरुषों ! जो एक वेद का अभ्यास करने वाली वा दो वेद जिसने अभ्यास किए वा चार वेदों की पढ़ने वाली वा चार वेद और चार उपवेदों की शिक्षा से युक्त वा चार वेद, चार उपवेद और व्याकरण आदि शिक्षा युक्त, अतिशय कर के विद्याओं में प्रसिद्ध होती और असंख्यात अक्षरों वाली होती हुई सब से उत्तम, आकाश के समान व्याप्त निश्चल परमात्मा के निमित्त प्रयत्न करती है और गौ स्वर्ण युक्त विदुषी स्त्रियों को शब्द कराती अर्थात् जल के समान निर्मल वचनों को छांटती अर्थात् अविद्यादी दोषों को अलग करती हुई वह संसार के लिए अत्यंत सुख करने वाली होती है।(ऋग्वेद १०.८५.४६)

स्त्री को परिवार और पत्नी की महत्वपूर्ण भूमिका में चित्रित किया गया है। इसी तरह, वेद स्त्री की सामाजिक, प्रशासकीय और राष्ट्र की सम्राज्ञी के रूप का वर्णन भी करते हैं।

ऋग्वेद के कई सूक्त उषा का देवता के रूप में वर्णन करते हैं और इस उषा को एक आदर्श स्त्री के रूप में माना गया है। कृपया पं श्रीपाद दामोदर सातवलेकर द्वारा लिखित ” उषा देवता “, ऋग्वेद का सुबोध भाष्य देखें।(पृ १२१ – १४७)

१. स्त्रियां वीर हों। (पृ १२२, १२८)
२. स्त्रियां सुविज्ञ हों। (पृ १२२)
३. स्त्रियां यशस्वी हों। (पृ १२३)
४. स्त्रियां रथ पर सवारी करें। (पृ १२३)
५. स्त्रियां विदुषी हों। (पृ १२३)
६. स्त्रियां संपदा शाली और धनाढ्य हों। (पृ १२५)
७. स्त्रियां बुद्धिमती और ज्ञानवती हों। (पृ १२६)
८. स्त्रियां परिवार, समाज की रक्षक हों और सेना में जाएं। (पृ १३४, १३६)
९. स्त्रियां तेजोमयी हों। (पृ १३७)
१०. स्त्रियां धन-धान्य और वैभव देने वाली हों। (पृ १४१-१४६)

6. निष्कर्ष

वेदों में नारी का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। नारी को न केवल सामाजिक, धार्मिक, बल्कि आर्थिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। नारी का योगदान भारतीय समाज की नींव को मजबूत करने में सहायक रहा

है। यह आवश्यक है कि हम वेदों में नारी के योगदान को समझें और इसे समाज में पुनर्स्थापित करें। वैदिक काल में "महिलाओं की स्थिति समाज में काफी ऊंची थी और उन्हें अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त थी। वे धार्मिक क्रियाओं में भाग ही नहीं लेती थीं बल्कि, क्रियाएं संपन्न कराने वाले पुरोहितों और ऋषियों का दर्जा भी उन्हें प्राप्त था।" उस समय महिलाएं धर्म शास्त्रार्थ इत्यादि में पुरुषों की तरह ही भाग लेती थीं।

7. संदर्भ

1. ऋग्वेद
2. यजुर्वेद
3. सामवेद
4. अथर्ववेद
5. भारतीय संस्कृति और सभ्यता पर आधारित शोध पत्र
6. <https://www.orfonline.org/research/optimising-urban-agriculture-a-pathway-to-food-security-in-india>
7. <https://www.jaguar.in/incontrol/incontrol/driver-assistance/park-assist.html>
8. <https://documents.worldbank.org/en/publication/documents-reports/documentdetail/603231468307155370/climate-change-and-agriculture-in-south-asia-alternative-trade-policy-options>
9. <https://www.bosch-mobility.com/en/solutions/parking/parking-assist/>
10. <https://www.valeo.com/en/catalogue/cda/park-assist-system-solutions/>
11. "The Rigveda shows abundant evidence pointing to the fact that women were fully the equals of men as regards access to and capacity for the highest knowledge even the knowledge of the absolute or Brahma" – Radha Kumud Mukherjee. - Quoted in, H.C. Upadhyay-The status of women in India"-p-39